4

आकलन–क्यों, कब और कैसे?

आकलन शिक्षण प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। इसलिए आकलन से संबंधित आवश्यक बातों की जानकारी होना शिक्षकों के लिए अत्यंत आवश्यक है। आकलन क्यों किया जाए, किसका किया जाए, कब किया जाए और कैसे किया जाए? आदि बातों की समझ यदि शिक्षकों में विकसित हो जाए तो निश्चित रूप से आकलन बच्चों के लिए एक हौव्वे के रूप में नहीं सामने आएगा। इसीलिए आकलन से संबंधित यह लेख यहाँ दिया जा रहा है। यह लेख परिषद् द्वारा विकसित शिक्षक संदर्शिका कैसे पढ़ाएँ रिमझिम से लिया गया है।

घर की दहलीज पार कर बच्चे जब औपचारिक विद्यालयी शिक्षा की परिधि के भीतर आते हैं तो उन्हें कुछ ही दिनों में पता चल जाता है कि यहाँ उन्हें आए दिन 'टेस्ट' नाम के हौव्वे का सामना करना पड़ेगा। ऐसा उन्हें सिर्फ़ उनके सहपाठियों के माध्यम से ही पता नहीं चलता अपितु अध्यापकों और अभिभावकों की बातों से भी इस सच्चाई का भान हो जाता है। जैसा कि अक्सर अध्यापक कहते हैं–'अगर ध्यान लगाकर नहीं पढ़ोगे तो फेल हो जाओगे' या फिर नंबर कम आए तो मत कहना।' इसी तरह से अभिभावक भी समय–समय पर चेतावनी रहते हैं– 'स्कूल में तुम्हें मौजमस्ती करने नहीं भेजा है, पढ़ाई करने के लिए भेजा है। ढंग से पढ़ाई करो वरना नंबर कम आए तो देखना।' या फिर 'देखो, सुरभि भी तो तुम्हारी उम्र की है उसे तो टेस्ट में 'ए' मिला है तुम्हें क्यों 'सी' मिला है? अगली बार तुम्हें ए+ लाना है वरना शाम का खेलकूद बंद।'

प्राथमिक कक्षाओं से ही नंबर, परीक्षा, अंक, पास/फेल, ए, ए+ आदि बच्चों पर इस तरह से हावी हो जाते हैं कि बच्चे सीखने–सिखाने का मज़ा लेना ही भूल जाते हैं। वे रोचक से रोचक कहानी–कविता का भी आनंद नहीं उठाते क्योंकि उनके मस्तिष्क में एक ही बात घूम रही होती है कि पाठ खत्म होते ही उनसे प्रश्न पूछे जाएँगे और उत्तर न दे पाने पर उन्हें डाँटा जाएगा। डफ़र, बेवकूफ़, नालायक जैसे लेबल लगाए जाएँगे या फेल करने का डर दिखाया जाएगा। यह बात सही है कि आकलन और मूल्यांकन विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है पर निश्चित रूप से उसका ऐसा स्वरूप तो कदापि स्वीकार्य नहीं कि बच्चे सीखने की अपेक्षा तथ्यों को रटें, याद करें और मूल्यांकन

से हर समय डरे-सहमे रहें। हमारा उद्देश्य है–सभी बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करना, सीखने का एक प्रोत्साहन भरा माहौल देना और प्रत्येक बच्चे की क्षमता, उम्र और स्तर को ध्यान में रखते हुए उसे एक निश्चित स्तर तक पहुँचने में मदद करना। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए हमें आकलन और मूल्यांकन को सीखने के एक साधन के रूप में देखना चाहिए न कि सीखे गए की जाँच के उपकरण के रूप में। बच्चे ने सीखा या नहीं और अगर सीखा है तो कितना सीखा, मात्र यह जाँच लेना मूल्यांकन नहीं है।

वास्तव में बच्चे कैसे सीख रहे हैं, क्या नहीं सीख पा रहे और क्यों नहीं सीख पा रहे, सिखाने के कौन-से तरीके उन्हें आनंद देते हैं और किन विधियों से उनमें झुँझलाहट या तनाव पैदा होता है, यह सब जानना मूल्यांकन की प्रक्रिया का हिस्सा है। बच्चे के सीखने के स्तर और उपलब्धियों को परखने के स्थान पर यह तय करना जरूरी है कि कक्षा में अपनाई गई अधिगम तकनीकें बच्चों की समझ बढ़ाने में कितनी सहायक सिद्ध हुई हैं।

भाषा शिक्षण के संदर्भ में भी आकलन व मूल्यांकन की प्रक्रिया इसी सिद्धांत की माँग करती है। भाषायी कौशलों का आकलन कैसे किया जाए, इस विषय पर बात करने से पहले नीचे लिखी बातों पर गौर करना जरूरी है–

- हर विद्यार्थी अपने-आप में अद्वितीय है।
- सीखने-सिखाने के संदर्भ में हर विद्यार्थी की अपनी कुछ ज़रूरतें है।
- हर विद्यार्थी के सीखने की अपनी एक गति (पेस) होती है।
- आकलन सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का अंग होता है, अत: सीखने से जुड़ी विद्यार्थी की ज़रूरतों, तरीकों व पेस को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता।
- जिस तरह सीखने व सिखाने के तरीके भिन्न-भिन्न होते हैं, उसी तरह से आकलन भी बहुविध होना चाहिए।

भाषा के संदर्भ में तो यह बात और भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि उसमें तो बोलने, सुनने, लिखने, पढ़ने, अभिनय करने, स्वतंत्र अभिव्यक्ति आदि का आकलन किया जाता है। अत: चली आ रही परिपाटी के अनुसार रटी-रटाई कविता-कहानी सुनवाकर और रटे-रटाए उत्तर लिखवाकर बात नहीं बनेगी।

यदि हम व्यापक संदर्भ में देखें तो मूल्यांकन का उद्देश्य बच्चों की सीखने की क्षमताओं का आकलन करना और सीखने के दौरान पेश आने वाली समस्याओं की पहचान करना होता है। भाषा के संदर्भ में मूल्यांकन के तीन उद्देश्य हो सकते हैं–

1. बच्चों की भाषायी समझ का आकलन।
2. विभिन्न संदर्भों में भाषा का उपयुक्त इस्तेमाल करने के कौशलों का आकलन।
3. भाषा के सौंदर्य को सराह पाने की क्षमता का आकलन।

उपर्युक्त उद्देश्यों के साथ किए जाने वाले मूल्यांकन की मदद से हम विभिन्न बच्चों की

विशिष्ट कठिनाइयों और समस्याओं को पहचान सकते हैं और उन कठिनाईयों को दूर करने के लिए अपनी शिक्षण-पद्धति में उचित फेर-बदल कर सकते हैं। इस प्रकार मूल्यांकन सिर्फ़ बच्चों के भाषायी विकास को आँकने का माध्यम ही नहीं बल्कि अपनी शिक्षण-पद्धतियों का आकलन करने का मापदंड भी है।

यदि हम मूल्यांकन को उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में देखते हैं तो दो बातें साफ़ जाहिर हो जाती है–

1. वार्षिक मूल्यांकन बच्चों के भाषायी विकास के आकलन का एकमात्र आधार नहीं हो सकता।
2. पाठ्यपुस्तक पर आधारित ज्ञान बच्चों की समग्र भाषायी समझ का प्रतिनिधि नहीं हो सकता।

इसलिए यह जरूरी है कि प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों की भाषायी क्षमता को आँकने का मुख्य आधार वार्षिक मूल्यांकन की बजाए सतत मूल्यांकन हो। नीचे सतत मूल्यांकन के लिए कक्षा के अनुसार कुछ बिंदु सुझाए गए हैं।

कक्षा एक और दो

बोलना-सुनना

इन कौशलों के विकास को आँकने की सबसे ज़रूरी शर्त यह है कि हम अच्छे श्रोता बनें। यदि हम बच्चों की बातों को गौर से सहिष्णुता के साथ सुनने के आदी होंगे और अपने अंदर बच्चों का अवलोकन करने की क्षमता विकसित करेंगे तभी हम यह अंदाज़ा लगा पाएँगे कि बच्चों का आकलन कैसे करें। इस प्रकार के आकलन के लिए यह भी ज़रूरी है कि कक्षा में निर्भय और खुला वातावरण हो ताकि बच्चे बेझिझक होकर बातचीत में हिस्सा ले सकें। कक्षा में बोलने और सुनने के अवसर जुटाने के लिए बच्चों के साथ सामूहिक बातचीत के अलावा तरह-तरह की गतिविधियाँ करवाई जाएँ। बच्चों के छोटे-छोटे समूह बना लें। शिक्षक इन समूहों में घूम-घूमकर बच्चों की बातचीत को गौर से सुने। आपके मन में प्रश्न उठेगा कि 'सुनने-बोलने' में किस बात का मूल्यांकन किया जाए? बच्चों की बोलने-सुनने की क्षमता का आकलन करने के कुछ बिंदु निम्नलिखित हो सकते हैं–

- भाषा की स्पष्टता
- बोलने का आत्मविश्वास
- कल्पना
- तार्किकता
- मौलिकता

पढ़ना

पढ़ने के कौशल में प्रगति को आँकने के लिए बच्चों के पढ़ने के तरीकों का गहरा अवलोकन और उसे गौर से सुनना ज़रूरी है। क्या बच्चों का ध्यान अक्षरों को जोड़कर पढ़ने पर है या अर्थ को समझने पर है? क्या स्कूल और स्कूल के बाहर के परिवेश में मौजूद तरह-तरह की लिखित सामग्री (जैसे विज्ञापन, साइनबोर्ड, नोटिस आदि) को बच्चा संदर्भ से जोड़कर

पढ़ने की कोशिश करता है? क्या बच्चे जो कुछ पढ़ते और सुनते हैं उसे अपने अनुभवों से जोड़ पाते हैं? ये सब जाँचने के लिए बच्चों से उनके परिवेश के बारे में बातचीत की जाए। यह बातचीत हम छोटे-छोटे समूहों में करें तो प्रत्येक बच्चे का आकलन करने में आसानी होगी।

पढ़ने की क्षमता का आकलन निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर किया जा सकता है–

- समझकर पढ़ना
- चित्रों से जोड़कर पढ़ना
- पढ़ने में प्रवाह
- तरह-तरह की सामग्री पढ़ने की उत्सुकता

लिखना

सबसे पहले बच्चों में यह समझ होनी ज़रूरी है कि लिखना है क्या? हम जो बोलते हैं उसे अमूर्त संकेतों की सहायता से अभिव्यक्त करना लिखना है। जिस प्रकार कक्षा में बच्चों के बोलने के अवसर जुटाना ज़रूरी है उसी प्रकार मुक्त होकर लिखने के अवसरों और कक्षा में सकारात्मक माहौल का होना बहुत ज़रूरी है। प्रत्येक बच्चे के लेखन का अलग से रिकार्ड हो तो आकलन बेहतर ढंग से किया जा सकता है। इसके लिए प्रत्येक बच्चे के लेखन के नमूनों की अलग-अलग फ़ाइल बनाई जा सकती है। पहली कक्षा के शुरुआती दौर में बच्चा एक अधूरे वाक्य के ज़रिए भी कुछ अभिव्यक्त करने की कोशिश करता है तो उसे लेखन माना जाएगा। यहाँ वर्तनी और व्याकरण की अशुद्धियाँ तथा अक्षर बनाने का ढंग ज़्यादा महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि बच्चा जो सोचता और महसूस करता है उस लिखकर अभिव्यक्त करने की कोशिश करे।

बच्चों के लेखन को आँकने के लिए निम्नलिखित बिंदु हो सकते हैं–

- भाषा की स्पष्टता, प्रवाह
- मौलिकता
- भाव और विचारों की स्पष्टता
- कल्पनाशीलता

अभिव्यक्ति के अन्य माध्यम

बोलने और लिखने के अलावा चित्रांकन, नाट्य-प्रस्तुति, एकाभिनय, मूकाभिनय जैसे अभिव्यक्ति के कई माध्यम हो सकते हैं जिन्हें हम सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा बना सकते हैं। इन माध्यमों के इस्तेमाल में बच्चों की प्रगति को आँकने के निम्नलिखित बिंदु हो सकते हैं–

अभिनय के विभिन्न रूप

- चेहरे के हाव-भाव
- आवाज़ का उतार-चढ़ाव
- शरीर के अंगों का इस्तेमाल
- कल्पनाशीलता
- मौलिकता
- स्थान का इस्तेमाल

चित्रांकन

- कल्पनाशीलता/सृजनशीलता

देखना/अवलोकन

अवलोकन पढ़ना/लिखना सीखने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है। पढ़ते समय जब बच्चे अनुमान लगाकर कविता-कहानी आदि का अर्थ समझने की कोशिश करते हैं तो वे बार-बार चित्रों का सहारा लेते हैं। जिस प्रकार पढ़ते समय हम कागज पर लिखी सामग्री को अपने पूर्वज्ञान (पिछले अनुभवों) के साथ जोड़कर अर्थ को समझने की कोशिश करते हैं, उसी प्रकार हम चित्र को भी अपने अनुभवों के आधार पर अर्थ देने की कोशिश करते हैं। बच्चे भी ऐसा बखूबी कर सकते हैं यदि उन्हें चित्रों को देखकर उन पर अपने हिसाब से बात करने या लिखने के मौके मिलें।

बच्चों की अवलोकन क्षमता को निम्नलिखित बिंदुओं पर आँका जा सकता है।

- बारीकी
- अनुमान
- कल्पना
- तार्किकता

कक्षा तीन, चार और पाँच

ऊपर मूल्याकन के विभिन्न बिंदुओं की विस्तार से चर्चा हो चुकी है। इसलिए कक्षा तीन, चार और पाँच के संदर्भ में इन बिंदुओं को आँकने के मापदंडों की ही बात की गई है।

लिखने और पढ़ने के लिए कुछ बिंदु सुझाए जा सकते हैं। जैसे–

लेखन

- सहज एवं स्पष्ट अभिव्यक्ति
- उद्देश्य को ध्यान में रखकर लिखना
- मौलिकता
- पढ़ी हुई सामग्री को अपने शब्दों में लिख पाना
- विषय-वस्तु चुनने में हिस्सेदारी आदि

पठन

- पुस्तकें पढ़ने व चुनने में दिलचस्पी।
- चयन में विविधता या पसंदीदा सामग्री ही पढ़ना।
- पढ़ते समय तरह-तरह की विधियों का इस्तेमाल जैसे–महत्वहीन शब्द को छोड़ देना, संदर्भ से अर्थ का अंदाजा लगाना, अक्षरों को जोड़कर अपरिचित शब्द को पढ़ना।
- समझ/अर्थ के लिए पढ़ना आदि।

इसके लिए शिक्षक/शिक्षिका को हर बच्चे के साथ कुछ समय उनका पढ़ना सुनने में बिताना होगा और रिकॉर्ड रखना होगा।

अभिव्यक्ति (मौखिक)

- भाषा की स्पष्टता
- मौलिकता
- सृजनशीलता व कल्पनाशीलता
- तार्किकता
- संदर्भ के अनुरूप उचित भाषा-प्रयोग

मूल्यांकन करते समय इस बात का ध्यान रखें कि बच्चे की प्रगति की तुलना किसी पूर्व कल्पित मापदंड से न की जाए। उनकी प्रगति

का लगातार और सूक्ष्म आकलन करें और प्रत्येक बच्चे का रिकॉर्ड रखे जिसमें हर सप्ताह या पखवाड़े में बच्चे की प्रगति के बारे में टिप्पणी लिखें। बच्चों की विभिन्न गतिविधियों पर ध्यान रखते हुए उनकी प्रगति की जाँच करें जैसे-कक्षा में परिचर्चा में भाग लेते हुए, छोटे समूह में काम करते हुए, कापियाँ या दूसरी जगह पर लिखित कार्य करते हुए आदि।

प्राथमिक कक्षाओं में भाषा ज्ञान की उपलब्धि बच्चों का न केवल भाषा विशेष में प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती है वरन् अन्य विषयों के अध्ययन को भी प्रभावित करती है। इसलिए बच्चों की कमियों के कारणों की खोज़ करना बहुत ज़रूरी है। इन कारणों की पहचान करके ही आप उनको दूर करने के तरीके सोच पाएँगे। यह कार्य कठिन तो है, पर पहले से योजना बनाकर कार्य करने से यह सब आसान हो जाता है। यदि आपको शुरुआत करने में दिक्कत महसूस हो रही है तो आप चरणबद्ध तरीके से भी मूल्यांकन की शुरुआत कर सकते हैं।

आमतौर पर मूल्यांकन के नाम पर जो परीक्षा ली जाती है, वह बच्चों की कमियाँ ढूँढ़ने के अतिरिक्त कुछ नहीं करती। दूसरी ओर मूल्यांकन का मकसद बच्चों के व्यवहार में आए सभी परिवर्तनों की सराहना करना है।

बच्चों के लिखित कार्य की जाँच

पहली अथवा दूसरी कक्षा की बात यदि छोड़ दी जाए तो 'लिखना' हर विषय की एक अनिवार्य गतिविधि है। ज्ञान के हस्तांतरण की बात हो या अभिव्यक्ति एवं संप्रेषण की, 'लिखना' महत्वपूर्ण कौशल है और हर अध्यापक की यह जवाबदेही बनती है कि बच्चों द्वारा विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था में एक निश्चित अवधि बिताने के बाद उन्हें अपनी बात लिखकर संप्रेषित करने का कौशल आ जाना चाहिए।

नीचे कक्षा पाँच के विद्यार्थियों के बच्चों के लिखित कार्य के नमूने दिए गए हैं। आइए इनका विश्लेषण करें और देखे कि ये किस हद तक बच्चों की भाषायी क्षमता (लेखन) का मूल्यांकन कर पाते हैं–

आपने तीनों पत्र पढ़े। पत्रों के संदर्भ में आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

- एक ही विषय पर अलग-अलग विद्यार्थियों के पत्र हैं।
- तीनों के पत्र लिखने की एक ही शैली है
- तीनों विद्यार्थियों के पत्र की विषयवस्तु भी एक ही है– पिता का दिल्ली से लखनऊ तबादला, घर का बदलना और प्रमाणपत्र जारी करने के लिए निवेदन।

जिन विद्यार्थियों के पत्रों के नमूने यहाँ दिए गए है, उनकी कक्षा के बाकी 46 विद्यार्थियों ने भी प्रमाणपत्र जारी करने के लिए यही कारण लिखा था। (पिता का दिल्ली से लखनऊ तबादला) सोचिए, क्या कक्षा के सभी विद्यार्थियों के पिता का एक-ही साथ लखनऊ तबादला हुआ होगा? क्या कारण है कि सभी विद्यार्थियों ने एक जैसा ही पत्र लिखा?

अनुमान तो यही है कि अध्यापक ने श्यामपट्ट पर यह पत्र लिखा होगा और विद्यार्थियों ने उसे

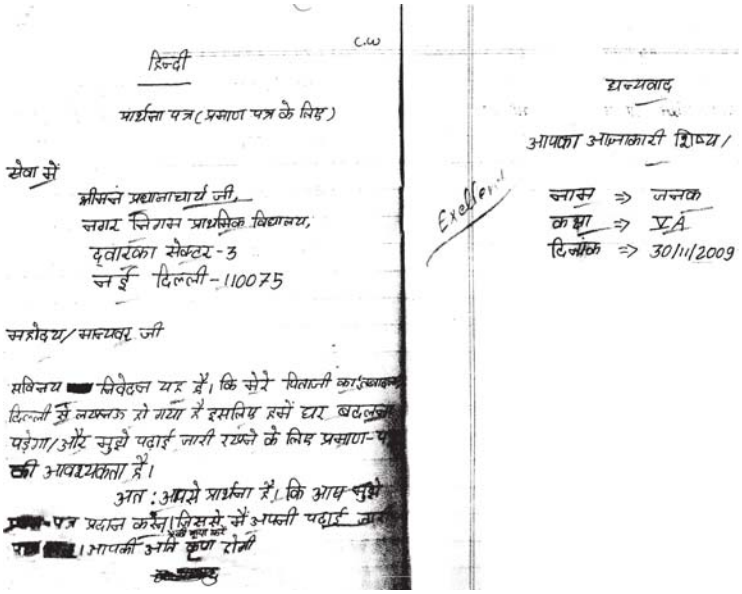

C.W

हिन्दी

प्रार्थना पत्र (प्रमाण पत्र के लिए)

सेवा में

श्रीमान प्रधानाचार्य जी,
नगर निगम प्राथमिक विद्यालय,
द्वारका सेक्टर-3
नई दिल्ली-110075

महोदय/मान्यवर जी

सविनय निवेदन यह है। कि मेरे पिताजी का ट्रांसफर दिल्ली से लखनऊ हो गया है इसलिए हमें घर बदलना पड़ेगा/और मुझे पढ़ाई जारी रखने के लिए प्रमाण-पत्र की आवश्यकता है।

अत: आपसे प्रार्थना है। कि आप मुझे प्रमाण-पत्र प्रदान करें। जिससे मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ। आपकी अति कृपा होगी

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य/

नाम ⇒ जनक
कक्षा ⇒ V A
दिनांक ⇒ 30/11/2009

Excellent

विषय पर पत्र लिखें। आमतौर पर अध्यापक कॉपी जाँचने की सुविधा को मद्देनज़र रखते हुए सभी विद्यार्थियों को एक ही विषय पर लेखन कार्य करवाते हैं। वे श्यामपट्ट पर स्वयं सब कुछ लिख देते हैं और बच्चे उसकी नकल उतार लेते हैं। किसी भी स्थिति में यह बच्चों की लेखन क्षमता की जाँच नहीं हो सकती। विद्यार्थी जो बात कहना चाह रहे हैं उसे लिखना ही लेखन/लिखना कहलाएगा इसलिए इन तीनों पत्रों की जाँच से तो हम बच्चों की लिखने की क्षमता के बारे में किसी भी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकते।

अब आप पर्यायवाची शब्दों के इस उदाहरण पर गौर करें–

विद्यार्थी ने कुछ शब्दों के पर्यायवाची लिखे है। कक्षा के बाकी विद्यार्थियों ने भी इसी तरह से अपनी-अपनी कॉपी में पर्यायवाची लिखे हैं।

क्या आप इस लेखन के आधार पर यह पता लगा सकते हैं कि विद्यार्थी को इस बात की समझ बन पाई है या नहीं कि किस स्थिति विशेष में 'अग्नि' शब्द का प्रयोग करना सटीक रहेगा, कहाँ पर 'आग' का प्रयोग करना उपयुक्त होगा और किस स्थिति विशेष में 'अनल' शब्द का प्रयोग किया जा सकता है। इसी तरह के प्रश्न बाकी शब्दों के संदर्भ में भी उठेंगे। यहाँ पर किया यह जाना चाहिए था कि ऐसे वाक्य

अपनी कॉपी में ज्यों का त्यों उतार दिया होगा।

क्या इस तरह से आप विद्यार्थियों के पत्र लेखन कौशल का आकलन कर सकते हैं? निश्चित रूप से आपका उत्तर 'नहीं' में होगा। इन पत्रों के माध्यम से हम विद्यार्थियों की किसी भी देखी गई लिखित सामग्री की नकल करने की क्षमता या कौशल की जाँच कर रहे हैं, उससे अधिक कुछ भी नहीं।

इस पत्र के संबंध में (औपचारिक पत्र-लेखन) बेहतर तो यह होता कि 'प्रमाण पत्र जारी करने का' विषय ही बच्चों को नहीं दिया जाना चाहिए था। हाँ, यदि कक्षा में कुछ एक बच्चे ऐसे हैं जिन्हें प्रमाण पत्र चाहिए, उन्हें इस विषय पर पत्र ज़रूर लिखवाया जा सकता था, शेष विद्यार्थियों को कोई और विषय दिया जा सकता था। यह किसी भी पाठ्यक्रम की माँग नहीं है कि कक्षा के सभी विद्यार्थी एक ही

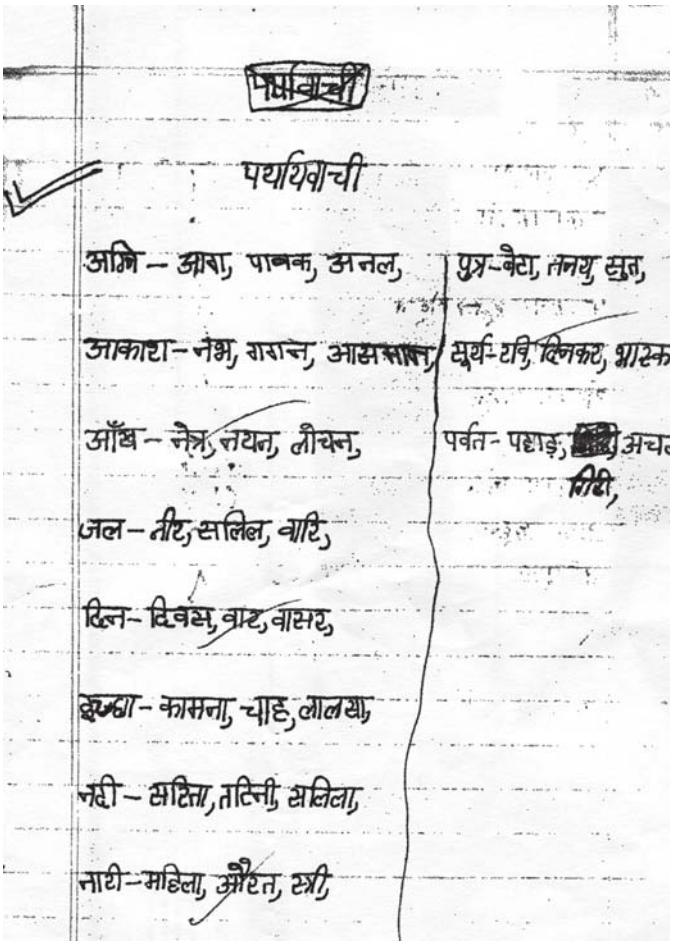
पर्यायवाची

पर्यायवाची

अग्नि – आग, पावक, अनल,

पुत्र – बेटा, तनय, सुत,

आकाश – नभ, गगन, आसमान,

सूर्य – रवि, दिनकर, भास्कर

आँख – नेत्र, नयन, लोचन,

पर्वत – पहाड़, अचल, गिरी,

जल – नीर, सलिल, वारि,

दिन – दिवस, वार, वासर,

इच्छा – कामना, चाह, लालसा,

नदी – सरिता, तटिनी, सलिला,

नारी – महिला, औरत, स्त्री,

प्रस्तुत दिए जाते जिनमें इन शब्दों का प्रयोग किया गया होता जैसे–

- जंगल में 'आग' फैलती ही जा रही थी।
- यज्ञ के लिए अग्नि प्रज्जवलित की जा चुकी थी।

इस तरह के प्रयोगों के माध्यम से विद्यार्थियों में यह समझ पैदा की जानी चाहिए थी कि स्थिति विशेष के लिए शब्दों का चयन किस तरह से किया जाए और उनसे भी कहा जाता कि अब वे स्वयं इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करें और उनके इस काम की जाँच करना उनकी भाषायी क्षमता की जाँच करने के लिए मददगार साबित होता।

लिखने के कौशल का आकलन करते समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि अध्यापक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखे गए शब्दों/वाक्यों को, जिन्हें बच्चों ने अपनी कॉपी में उतार लिया है, जाँचना निरर्थक ही है क्योंकि यह तो अध्यापक के काम की पुनः प्रस्तुति ही तो हुई। होना यह चाहिए था कि विद्यार्थियों से मौखिक रूप से सवाल पूछे जाते फिर उन्हें कहा जाता कि वे इन उत्तरों को अपनी भाषा में लिखें और तब उस काम की जाँच से पता लग पाता कि 'लिखने' के अपेक्षित स्तर तक पहुँचाने के लिए उन्हें किस तरह की मदद की ज़रूरत है।

इस संबंध में एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि *रिमझिम श्रृंखला* में दिए गए प्रश्न एक से उत्तर की माँग नहीं करते हैं। इन सवालों के उत्तर देने के लिए विद्यार्थी के अनुभव, उनका दृष्टिकोण, घटनाओं को समझने के उनके अपने तरीके सभी को साझा करना होगा। कहने

का तात्पर्य यह है कि विद्यार्थी प्रश्नों का उत्तर देने के लिए अपने अनुभवों को झिंझोड़े और उनके आधार पर जबाव लिखें न कि अध्यापक के उत्तर को अपना उत्तर मान कर लिख दें। हमें समझना होगा कि भारत अपने मूल स्वभाव में ही बहुभाषी और बहुलतावादी संस्कृति संपन्न देश है। ऐसे में यहाँ के बढ़ते हुए बच्चों की अभिव्यक्ति क्षमता की पहचान किसी एक पैमाने या तयशुदा उत्तर से संभव नहीं। उन्हें जाँचने-परखने के लिए तो उनकी अभिव्यक्ति विशेष की पहचान कर उसे तराशना ही भाषा के मूल्यांकन का सबसे महत्वपूर्ण अंग होना चाहिए। इसी को ध्यान में रखकर निर्मित प्रश्न अभ्यास विद्यार्थियों की सृजनात्मकता और उनकी अलग-अलग विशेषता को पहचानने और बढ़ावा देने का माध्यम बन सकते हैं।

समग्र निपुणता कैसे मापी जाए?/सभी भाषायी आयामों का आकलन

बच्चे की समग्र यानी हर तरह की निपुणता के स्तरों को मापने के लिए क्लोज़ टेस्ट एक प्रभावशाली तरीका है।

क्लोज़ टेस्ट

भाषायी निपुणता जानने के लिए यह टेस्ट या जाँच का एक सुस्थापित तरीका है। क्लोज़ टेस्ट में विद्यार्थियों को कोई भी पाठ्य-सामग्री पढ़ने के लिए दी जाती है। पढ़ने के लिए देने से पहले प्रत्येक वाक्य का कोई-सा शब्द, आमतौर पर पाँचवाँ या सातवाँ शब्द हटा दिया जाता है। विद्यार्थी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह पूरी पाठ्य-सामग्री को पढ़े और हटाए गए शब्दों के स्थान पर, जो रिक्त स्थान के रूप में हैं, अपनी समझ से शब्द सुझाए।

विद्यार्थी रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए भाषा विज्ञान से जुड़े ज्ञान/भाषायी ज्ञान, पाठ से जुड़े संदर्भों की समझ तथा व्यावहारिक जगत की समझ को आधार बनाएँगे। पाठ्य-सामग्री में से शब्दों को हटाने के दो तरीके हैं–

- हरेक वाँ शब्द (उदाहरण के तौर पर पाँचवाँ या सातवाँ शब्द) हटा दिया जाता है। इसे निश्चित/नियत अनुपात विधि कहा जाता है।
- भिन्नात्मक आनुपातिक विधि में शब्दों को हटाने के लिए कुछ खास किस्में तय कर ली जाती हैं जैसे–भूतकाल वाली क्रियाएँ।

सामान्यतया पहले तरीके के उपयोग का अधिक प्रचलन है। भिन्नात्मक आनुपातिक विधि का उपयोग उन स्थितियों में अधिक लाभकारी है जब भाषा के किसी विशेष आयाम की परीक्षा करनी है।

यह देखा गया है कि जो बच्चे क्लोज़ टेस्ट में निपुणता दिखाते हैं वे भाषा के हर पहलू में अच्छा कर सकते हैं। वे प्रभावशाली प्रदर्शन करते हैं। ऐसे बच्चों में अन्य विषयों में कुछ बेहतर प्रदर्शन की संभावनाएँ नज़र आती हैं। आखिरकार कुछ भी सीखने के लिए भाषा की जानकारी, समझ और निपुणता महत्वपूर्ण है। यहाँ क्लोज़ टेस्ट का उपयोग सीखने-सिखाने के उपकरण के रूप में किया गया है।

क्लोज़ टेस्ट बनाना बहुत ही आसान है। किसी भी गद्य या पद्य पाठ्य-सामग्री का कोई-सा भी अंश चुन सकते हैं। अंश रुचिकर हो, चुनौतीपूर्ण हो। पहले और आखिरी वाक्य को ज्यों-का-त्यों रहने दीजिए। उस शब्द के स्थान पर यानी कि खाली जगह पर रेखा/लाइन खींचिए। हर वाक्य में जो भी सातवाँ शब्द हटेगा, रिक्त स्थान दर्शाने वाली रेखा (लाइन) की लंबाई एक-सी ही होनी चाहिए। उदाहरण के तौर पर पहले वाक्य में 'बैठा' शब्द हटाया है और दूसरे वाक्य में 'से' शब्द हटाया है। 'बैठा' शब्द 'से' की अपेक्षा अधिक जगह घेरता है पर रिक्त स्थान दर्शाने वाली लाइन दोनों ही स्थानों पर बराबर आकार की होगी। इसके नियम के पीछे तथ्य यह है कि बच्चे कम या ज़यादा जगह के आधार पर शब्दों का अनुमान न लगाने पाएँ।

बच्चों को खाली स्थान वाला अंश पढ़ने के लिए दें। उन्हें बताएँ-

- दिए गए अंश को दो बार जरूर पढ़ें।
- खाली स्थान को तभी भरें जब आप इसे तीसरी बार पढ़ रहे हों।
- हर खाली स्थान में केवल एक ही शब्द भरें।

क्लोज़ टेस्ट के लिए दिए गए खंड में कम-से-कम बीस रिक्त स्थान तो होने ही चाहिए। इस प्रकार से देखा जाए तो उस खंड में कम-से-कम 160-170 शब्द तो जरूर होंगे ही/होने चाहिए।

इस टेस्ट का इस्तेमाल तीसरी कक्षा से शुरू किया जा सकता है। जैसे-जैसे बच्चे अभ्यस्त होने लगें, कठिनता के स्तर तथा खंड की लंबाई को बढ़ाया जा सकता है। आप इस बात को ज़रूर महसूस करेंगे कि क्लोज़ टेस्ट प्रक्रिया को कक्षा 1 से 2 में भी किसी रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

क्लोज़ टेस्ट का अंकन (स्कोरिंग) करने के बहुत-से तरीके हैं। पहले तरीके में तो केवल उन्हीं शब्दों को सही माना जाता है जो मूल पाठ्य-सामग्री में मौजूद हैं। दूसरे तरीके में उन शब्दों को भी सही मान लिया जाता है जो मूल खंड में मौजूद नहीं हैं पर संदर्भ से मेल खाते हैं। बहुत-से भाषा वैज्ञानिक पहले ही तरीके को सही मानते हैं। क्लोज़ टेस्ट का एक उदाहरण प्रस्तुत है-

किसान की होशियारी

एक किसान अपना खेत जोत रहा था, अचानक कहीं से भालू आ गया।

भालू किसान को मारने झपटा। किसान ने कहा, "मुझे क्यों मारते हो? फ़सल आने दो, जो कहोगे वही खिलाऊँगा।"

भालू ने कहा, "ज़मीन के ऊपर की फ़सल मेरी और नीचे की तुम्हारी रहेगी।"

किसान ने आलू बो दिए। फ़सल आई तो भालू को पत्ते खाने को मिले। भालू चिढ़कर रह गया। अगली बार भालू ने कहा, "देखो इस बार ज़मीन के नीचे की फ़सल मेरी और ऊपर की तुम्हारी।"

किसान ने गेहूँ बो दिया। जब फ़सल तैयार हुई तो किसान को मिले चमकीले गेहूँ। भालू को मिली खाली जड़ें। भालू खीझकर रह गया इस बार भालू ने किसान को मज़ा चखाना

चाहा। उसने किसान से कहा, "ज़मीन के सबसे ऊपर और ज़मीन के नीचे की फ़सल मेरी।" किसान मान गया।

इस बार किसान ने लगाया गन्ना। जब फ़सल आई तो भालू को मिले पत्ते और जड़ें। भालू का सिर चकरा गया।

गतिविधि-1 रिक्त स्थान की पूर्ति

नीचे लिखे गद्यांश को पहले दो बार ध्यान से पढ़ो।

तीसरी बार पढ़ते समय हर खाली स्थान में एक उपयुक्त शब्द भरो। ध्यान रहे कि एक खाली स्थान में केवल एक ही शब्द भरना है।

एक किसान अपना खेत जोत रहा था, अचानक कहीं से भालू आ गया। भालू किसान को मारने (1) .....। किसान ने कहा, "मुझे (2) ..... मारते हो? फ़सल आने दो, जो (3) ..... वहीं खिलाऊँगा।"

भालू ने कहा, "ज़मीन (4) ..... ऊपर की फ़सल मेरी और (5) ..... की तुम्हारी रहेगी।" किसान ने आलू बो (6) .....। फ़सल आई तो भालू (7) ..... पत्ते खाने को मिले। भालू चिढ़कर रह गया। अगली बार भालू ने (8) ....., "देखो इस बार ज़मीन के (9) ..... की फ़सल मेरी और ऊपर की तुम्हारी।" किसाान ने गेहूँ बो दिया। जब फ़सल तैयार हुई (10) ..... किसान को मिले चमकीले गेहूँ। भालू को मिली खाली (11) .....। भालू खीझकर रह गया।

इस बार भालू ने (12) ..... को मज़ा चखाना चाहा। उसने किसान से कहा, " (13) ..... के सबसे ऊपर और ज़मीन के नीचे की फसल मेरी।" किसान मान गया।

इस बार किसान ने (14) ..... गन्ना। जब फ़सल आई तो (15) ..... को मिले पत्ते और जड़ें। भालू का सिर चकरा गया।

क्रमांक	*सही शब्द*	*सही शब्द*
1.	झपटा	दौड़ा, लपका, को पलटा
2.	कहोगे	चाहोगे, बोलोगे, कहो, कह दो
3.	नीचे	तले, बीच, बाकी की
4.	कहा	साफ साफ बोल दिया, बोला, धमकाया
5.	जड़े	ठेंगा, फूस, तिनके, जमीन
6.	लगाया	बोया, डाला, रोपा, बीजा, पेरा, काटा

गतिविधि-2 : प्रश्न बनाना

गतिविधि के अंतर्गत बच्चों द्वारा जो प्रश्न बनाए गए, वे इस तरह हैं–

1. किसान ने भालू की मार से बचने के लिए क्या कहा?
2. दोनों में से कौन चालाक था? भालू या किसान?
3. किसान ने माल हड़पने के लिए कौन-सी जुगत लगाई?
4. भालू की हर बार लिल्ली-लिल्ली पोके क्यों हुई?
5. दूसरी बार किसान ने खेत में कौन-सी फ़सल लगाई?
6. किसान ने तीन बार फ़सल लगाई, तीनों बार की फ़सलों के नाम बताओ।
7. भालू बार-बार बुद्धू क्यों बन रहा था?
8. भालू किसान को मज़ा क्यों नहीं चखा पाया?

9. किसान को कौन मज़ा चखाना चाहता था?
10. तीसरी बार भालू की क्या शर्त थी?
11. भालू चौथी बार शर्त लगाएगा या नहीं?
12. अब अगर भालू को जीतना हो तो उसे क्या करना चाहिए।
13. किसान क्या कर रहा था?
14. भालू उसे क्या करने के लिए झपटा?
15. भालू का सिर कब चकराया?
16. किसान इतना बेईमान क्यों निकला?
17. भालू ने किसान को थप्पड़ क्यों नहीं मारा?
18. क्या भालू किसान पर विश्वास करेगा?
19. अब भालू क्या करेगा?
20. किसान इतना चालू क्यों निकला?
21. किसान के कमीनेपन पर भालू को गुस्सा क्यों नहीं आया?
22. किसान की चालाकी से भालू को क्या सीख मिली?
23. किसान खेत क्यों जोत रहा था?
24. भालू किसान की बात आसानी से क्यों मान गया?
25. किसान और भालू के नाम कौन-कौन से थे?
26. भालू किसान की शिकायत किससे करेगा?
27. क्या किसान हर बार भालू को चकमा देगा?
28. क्या भालू भी किसान की तरह बदतमीजी करता?
29. आप भालू जैसे बनना चाहोगे या किसान जैसा?
30. इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?
31. अगर भालू आपको कहता कि, "इस बार जमीन के नीचे की फ़सल मेरी और ऊपर की तुम्हारी" तो आप कौन-सी फसल लगाते?

गतिविधि-3 : शीर्षक

कक्षा में उपस्थित बच्चों ने कहानी के लिए जो शीर्षक सुझाए, वे इस प्रकार हैं–

क्रम संख्या	*शीर्षक*
1.	चालाक किसान
2.	किसान और भालू
3.	तीन-तीन शर्तें
4.	कौन हार गया शर्त
5.	बुद्धू बन गया भालू
6.	अकलमंद किसान
7.	पाजी किसानी
8.	शर्त लगायी किसने
9.	कलयुगी किसान
10.	और लगा तू शर्त
11.	चला भालू फ़सल खाने
12.	भालू की अक्ल लग गई ठिकाने
13.	आलू की फ़सल
14.	लगा ले बेटा शर्त
15.	भालू और किसान
16.	होशियार किसान
17.	भालू और किसान

गतिविधि-4 सही और स्वीकार्य प्रविष्टियों पर चर्चा

खाली स्थानों में बच्चों द्वारा भरे गए शब्दों पर उनके साथ चर्चा।

बच्चों ने अपने शब्दों के लिए कारण बताए–

1. दौड़ा–मारने के लिए तो कोई दौड़ेगा ही।
   लपका–भालू तो हर काम के लिए लपकता ही है।
   को पलटा–बिना पलटी मारे कोई कैसे मार सकता है।
2. चाहोगे–किसान भालू की इच्छा जानना चाहता था।
   बोलोगे–यही फिट बैठ रहा था। कहो-शर्त लगाने पर यही तो कहेगें।
3. तले–किसान धरती के ऊपर की लेगा तो भालू को तले की ही तो चीज़ मिलेगी।
   बीच-ये ही समझ में आया।
   बाकी की–जो बचेगी वही तो लेगा।
4. साफ़ साफ़ बोल दिया–भालू को डर थोड़े ही न था किसी का।
   बोला-बोलकर ही कहेगा, नहीं तो कैसे बताएगा
   धमकाया–पिछली बार टें बोली तो अबकी धमकाएगा
   हड़काया–उसे जबरदस्त गुस्सा आ रहा था।
5. ठेंगा–असली माल तो किसान को ही मिला न।
   फूस–फ़सल किसान की तो फूस ही तो भालू को मिलेगी
   तिनके–नीचे तो तिनके ही तिनके होते हैं। ज़मीन–फ़सल किसान की तो खाली ज़मीन भालू की
6. बोया–यही सही लगा।
   डाला–फ़सल डाली दी जाती है। रोपा-फसल रोपेगा न।
   बीजा–बीजेगा नहीं तो क्या करेगा।
   पेरा–गुड़ बनाने के लिए पेरेगा।
   काटा–गन्ने की फसल काटी

अंततः आपने यह ज़रूर महसूस किया होगा कि बच्चों का आकलन करना एक अलग गतिविधि नहीं है और न ही यह बच्चों, अभिभावकों व अध्यापकों पर अतिरिक्त भार है जिसके लिए हमें अतिरिक्त समय और प्रयास चाहिए। यहाँ पर यह बात जोड़नी भी ज़रूरी है कि बच्चों के सीखने के संबंध में एक विषय में सूचनाएँ इकट्ठी करते समय दूसरे विषयों/क्षेत्रों के पहलुओं के बारे में भी जानकारी हासिल की जा सकती हैं। कोशिश यह रहे कि परीक्षाएँ भी बच्चों को उत्सव जैसी ही लगे किसी भयानक स्वप्न जैसी नहीं।

अंकन का नमूना

क्लोज़ टेस्ट का अंकन नीचे दिए गए तरीके-से किया जा सकता है। एक तरफ विद्यार्थियों के नाम लिखें और दूसरी तरफ खाली जगह में भरे जाने वाले शब्द लिखें। भरे जाने वाले सही शब्दों के लिए '✓' का निशान लगाएँ। सहीं शब्दों को गिने। अंतिम कॉलम में उनका प्रतिशत निकाल सकते हैं।

शब्द	*1*	*2*	*3*	*4*	*5*	*6*	*7*	*8*	*9*	*10*	*11*	*12*	*13*	*14*	*15*
विद्यार्थियों के क्रमांक	*झपटा*	*क्यों*	*कहोगे*	*के*	*नीचे*	*दिया*	*को*	*कहा*	*नीचे*	*तो*	*जड़े*	*किसान*	*जमीन*	*लगाया*	*भालू*
1.	✓	काहे	✓	✓	✓	✓	✓	साफ़-साफ़ बोल दिया	✓	ठेंगा	✓	बोया	✓	✓	✓
2.	✓	✓	✓	से	✓	✓	✓	✓	तले	✓	✓	✓	✓	✓	✓
3.	दौड़ा	✓	✓	✓	✓	लगाया	✓	✓	✓	✓	✓	उसको	✓	डाला	जिनावर
4.	✓	✓	चाहोगे	✓	✓	✓	बरोबर	✓	✓	✓	फूस	✓	मिट्ट	✓	उसको
5.	✓	✓	✓	से	बीच	✓	✓	✓	अंदर	तभी	✓	✓	✓	✓	उसे
6.	✓	बेवजह	✓	✓	✓	फेरा	✓	बोला	✓	✓	✓	चालाकू	✓	रोपा	✓
7.	लपका	✓	में	बाकी	रोपा	✓	✓	भीतर की		✓	✓	पृथ्वी	✓	✓	✓
8.	✓	जबरदस्ती	✓	✓	✓	लौं	✓	✓	तभी	✓	✓	✓	✓	✓	✓